

प्रत्यक्षीषीत् MBh. 7, 1357. — desid. *siegen* —, *besiegen wollen*; *angreifen*: वयं प्रतिजिगीषतस्तत्र तान्समभिदुताः MBh. 7, 4376.

— वि med. P. 1, 3, 19. Vop. 23, 1. 1) *gewinnen, ersiegen, erobern*: असपत्नो विजिति विजयते Ait. Br. 1, 24. Çat. Br. 2, 2, 4, 18. पृथिवीम् 13, 5, 4, 13. लोकं विजयते परम् MBh. 1, 3642. 2303. प्राचीम् — दिशं व्यजयत 2, 992. विजिग्ये 1, 2268. 3706. 2, 1027. 1079. विजित्य 3, 956. R. 5, 22, 18. Çāntig. 2, 13. एवं विजित्य ताः कन्याः MBh. 1, 4125. गास्ता विजिता 4, 1660. act.: विजयेत् — द्रविणां बहु 1, 6943. विजेष्यामि च ते पशून् 4, 1281. त्रीन् लोकान्विजयेत् M. 2, 232. व्यजयल्लोहितं चैव मण्डलैर्दशभिः सह MBh. 2, 1025. पृथिवीम्, भूमिम्, श्रियम् 3, 1321. व्यजीजयत् 7, 2280. रुद्रस्य त्रिपुरं वै विजिग्युषः R. 4, 5, 30. pass.: विजिग्यते पुण्यवलेर्वलेर्युतं न शस्त्रिणाम् Rāga-Tar. 1, 39. विजिते ऽभ्ये ऽनाष्ट्रे Çat. Br. 4, 3, 5, 16. 1, 5, 3, 21. Lāt. 9, 10, 17. एषासि विजिता भेदे शत्रुकृतात्मन्या रणे R. 6, 100, 2. विजितारिपुर Ragh. 1, 59. भुजविजितविमान 12, 104. — 2) *besiegen, überwinden*: येन देवान्मुन्युषां पार्थो विजयते मृधे MBh. 4, 1345. 1, 7970. M. 7, 200. R. 3, 29, 27. Vikr. 16. Hit. III, 124. एष व्यजेष्ट देवेन्द्रम् BHATT. 13, 39. व्यजेष्टा विघ्ननायकान् 6, 68. विजिग्ये MBh. 3, 15252. 4, 1539. 7, 5855. BHATT. 14, 106. विजये MBh. 2, 1723. 3, 15853. त्वमेव समरे रामं विजेता 5, 7257. साम्ना u. s. w. विजेतुं प्रयतेतारोत्र युद्धेन M. 7, 198. विजित्य चारुवे शूरान् MBh. 2, 1024. Bhāg. P. 1, 13, 8. अविजित्य आत्मानम् MBh. 5, 1150. व्यजेष्ट षड्रुग्म् (Zorn u. s. w.) BHATT. 1, 2. act.: व्यजयन्नेवान् MBh. 3, 10254. 2, 585. 5, 7343. सर्वान्नेच्छतातीर्विजिग्यतुः 1, 7659. एतानेव विजेष्यामि 2, 1714. 3, 11331. 14265. 15175. 16609. 5, 304. 7039. Bhāg. P. 8, 21, 24. pass.: दैत्यबलं विजिग्ये BHATT. 2, 39. (नन्दनस्य) लक्ष्मीर्विजिग्ये भवनैः 11, 35. विजितामित्र R. 4, 6, 3. 52, 8. BHATT. 1, 10. im Spiele N. 26, 21. in astrol. Sinne VARAH. Bh. S. 17, 15, 24, 25. वदनविजितचन्द्राः R. 3, 23. तद्देगविजितान्वीत्य सतापि निजवाजिनः Vid. 35. विजितेन्द्रिय M. 6, 1. R. 1, 6, 3. 63, 21. विजितात्मन् Beiw. Çiva's Çiv. विजितासन der seinen Sitz überwunden hat, dem es einerlei ist worauf er sitzt Bhāg. P. 3, 28, 8. — 3) *siegen*: यस्मात् स्ते विजयन्ते जनांसः RV. 2, 12, 9. उतापूरीभ्यो मधवा वि जिग्ये 1, 32, 13. मरुताजो विजिग्यानः Çat. Br. 1, 6, 4, 21. TBr. 1, 1, 6, 2. ब्रह्म ह देवेभ्यो विजिग्ये KENOP. 14. act.: इतो जयेतो वि जय सं जय AV. 8, 8, 24. सर्वथा विजितं त्वया R. 5, 71, 17. विजित der gesiegt hat: यथा कृताय विजितायाधरे ऽयाः संयत्ति KHAND. Up. 4, 1, 4. einen Kampf mit Jmd (instr.) siegreich beendigen, obsiegen: देवा असुरैर्विजिग्यानाः Ait. Br. 3, 42. वि पाप्मना धातृव्येण जयते TS. 2, 2, 4, 2. einen Kampf zur Entscheidung bringen: देवसुराः संयत्ता आसुते न व्यजयन्त TS. 5, 4, 1, 1. ते द्वाधनुर्भिर्न व्यजयन्त Çat. Br. 1, 5, 4, 6. dem Siege entgegen gehen, siegen wollen: एवं विजयमानस्य ये ऽस्य स्युः परिपन्थिनः । तानानपेक्षं सर्वान्नामादिभिरुपक्रमैः ॥ M. 7, 107. siegen so v. a. hoch leben: विजयस्व राजन् Lāt. 9, 1, 17. Çik. 28, 7. 29, 3. 62, 1. 64, 14. 72, 11. PANKAT. 184, 1. विजयते Dhūrtas. 68, 15. चन्द्रकिं यावतावद्विजयतो देवः Hit. 106, 21. — desid. *gewinnen* —, *ersiegen wollen*: प्रतस्थे स्वर्गमेवाये विजिगीषन् HARIV. 8828. *besiegen wollen*: सपत्नान्विव जिगीषते Çat. Br. 2, 1, 2, 17. Bhāg. P. 5, 1, 18. अविजित्य य आत्मानममात्यान्विजिगीषते । अमित्रान्वा MBh. 5, 1150. 4337. eine siegreiche Entscheidung herbeiführen —, *siegen wollen*, *angreifen*: कृतं वाद्येव ब्रह्मन्विजिगीषामहे Çat. Br. 4, 5, 4, 6. व्यजिगीषत 4, 3, 5, 6. Ācva. Çr. 9, 7. नृपाणां विजिगीषताम् HARIV. 4977. —

Vgl. विजय, विजिगीषा, विजेष.

— सम् 1) *zusammen gewinnen*, — *erwerben*, *zusammenbringen*: संप्रामम् AV. 11, 9, 26. पुरो विश्वाः सौभगा संजिगीवान् RV. 3, 15, 4. सर्वो लोकान् AV. 11, 10, 12. धनानि RV. 4, 80, 9. 10, 48, 1. वर्मूनि 6, 73, 3. 8, 64, 12. 10, 69, 6. येनेमा विश्वा भुवनानि संजिता TBr. 3, 1, 4, 9. — 2) *zusammen besiegen*: उभो वृतां संपत्नी सं जयाति RV. 5, 37, 5. जयेम् सं युधि स्पृधः 1, 8, 3. पृतनाः AV. 5, 20, 4. 8, 8, 24. TBr. 3, 1, 2, 6. — Vgl. संजय.

2. जि, जिनाति s. u. जय.

3. जि (= 1. जि) adj. 1) adj. *siegend* (vgl. जित्). — 2) m. ein Piçākā EKAKSHARAK. im ÇKDn.

जिगृक्षु (von गम्) Uṇ. 3, 31. adj. *eilend, beweglich*: वातांसः RV. 10, 78, 3. अर्पः 5. वृष्टि 9, 97, 17. 101, 12. 7, 63, 1. 10, 120, 7. Nach UGÉVAL. zu UNIDIS. 3, 31 m. *Athem*.

जिगमिया (vom desid. von गम्) f. *das Verlangen zu gehen* ÇKDn. Wils.

जिगमिषितव्य (wie eben) part. fut. pass. P. 7, 2, 58. Vārtt. 1, Sch.

जिगमिषु (wie eben) adj. *im Begriff stehend zu gehen*: तत्र HARIV. 7171. वनम् u. s. w. MBh. 1, 5123. 13, 249 1. R. 2, 21, 63. Ragh. 9, 25.

जिगृक्षु (von 2. गृ) m. *Verschluckter, Verschlinger*: जिगृक्षुमिन्द्रो अग्रगृणाणः प्रति श्वसन्तमव दानवं कृन् RV. 5, 29, 4. — Vgl. जिगृक्षु.

जिगीषा (vom desid. von 1. जि) f. 1) *der Wunsch Etwas zu erlangen, zu erreichen, Erwartung*: (सर्वदानानि) दातव्यानि द्विजातिभ्यः स्वर्गमार्गजिगीषया MBh. 3, 13360. सतां गुरुजिगीषे हि चेतसि स्त्रीतृणं कियत् KATHAS. 24, 81. ऊर्धा नः सत्तु कोम्या वनान्यकानि विश्वा मरुतो जिगीषा (instr.) RV. 4, 171, 3. उप वृ षे नमसा जिगीषोषासानक्ता सुडधेव धेनुः 186, 4. — 2) *das Verlangen zu bestegen, zu siegen, die Oberhand zu gewinnen*; *Ehrgeiz*, = जयेष्ठा und व्यवसाय H. an. 3, 734. MED. sh. 36. ततो युद्धं सम्भवन्मम तस्य च । दिवसान्नुब्रून् — परस्परजिगीषया MBh. 5, 7142. यानं सस्मार कैवरे वैवस्वतजिगीषया Ragh. 13, 45. उपब्रूव्ये निविष्टेषु पाण्डवेषु जिगीषया MBh. 4, 493. जिगीषया सुसंख्यावन्तोऽन्यमभिनघ्नतुः Bhāg. P. 3, 18, 18. 19. MBh. 5, 7182. ये तदुन्मूलने शक्ता जिगीषा तेषु शोभते Rāga-Tar. 3, 283. तत्सर्वमजिगीषेण त्यक्तमेतेन भूता der keinen Ehrgeiz hatte KATHAS. 13, 7. अर्षः क्रोधसंभवः ॥ गुणो जिगीषोत्सार्कवान् H. 321. — 3) = प्रकर्ष H. an. MED.

जिगीषु (wie eben) 1) adj. a) *Etwas zu erlangen, zu erreichen wiinschend, auf Etwas ausgehend*: स्थाने रोषः प्रयुक्तः स्यान्नृपैः सर्वजिगीषुभिः MBh. 1, 6845. पदं त्रिभुवनोत्कृष्टं जिगीषोः Bhāg. P. 4, 8, 37. समावर्ति विक्षिता जिगीषुर्विषेणां कामश्चरताममभूत् RV. 2, 38, 6. — b) *zu besiegen, zu übertreffen, zu siegen wiinschend*: जिगीषुरात्मनः Bhāg. P. 5, 17, 19. धीराः परस्परजिगीषवः (विप्राः) R. 1, 13, 21. वृत्तिमप्याश्रितः शत्रुवर्धः स्याज्जिगीषुणा PANKAT. III, 129, 35. Ragh. 17, 76. ehrgeizig Rāga-Tar. 2, 144. कष्टं क्रूरा जिगीषवः KATHAS. 4, 126. प्राद्वत्त रणे भीता ये च राजन् जिगीषवः (sic) MBh. 3, 14905. — 2) m. N. pr. eines Mannes gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105.

जिगीषुता (von जिगीषु) f. *das Verlangen zu siegen, Ehrgeiz*: (अकरोत्) प्रतापं च जिगीषुता KATHAS. 18, 85.

जिगृक्षु (von जि) adj. *siegreich*: यो धावद्भिर्हृयते यश्च जिगृक्षुभिः RV. 1, 101, 6.

जिघृक्षु (von कृन्) adj. *der bestrebt ist zu verletzen* RV. 2, 30, 9.